International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 447-448

डॉ. ज्ञानी देवी के काव्य में अलंकार योजना

डॉ० राजेन्द्र सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, जनता महाविद्यालय, चरखी दादरी, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

बहु आयामी प्रतिभा की स्वामी पारगामी ऋतम्भरा प्रज्ञा की अनुयायी, कारयित्री एवं भावयित्री प्रतिभा की धनी सरस संत गुनग्राही, काव्य रस निर्माण की अप्रतिभा अश्विनी, सरस्वती की मूर्तिमान वरद् पुत्री, वनविटपी की छायादार वटवृक्षा कवयित्री डॉ. ज्ञानी देवी ने अपनी कविताओं को अलंकारों से सुशोभित किया है। अलंकार प्रथा काव्य में आदिकाल से अब तक ज्यों की त्यों चली आ रही है। इस प्रकार अलंकारों का काव्य में तब भी महत्व था और अब भी। कविता में अलंकार आवश्यक होना चाहिए। क्योंकि इनके बिना कविता सुशोभित नहीं होती।

अलंकार शब्द 'अलम-कृ' धातु कर्तृ अर्थ में अय प्रत्यय लगाकर निस्पन्न हुआ है जिसका अर्थ है-शोभाकारक पदार्थ। इस पद को दो प्रकार से विग्रह किया जा सकता है। 'अलं करोति इति अलंकार' अर्थात् शोभा बढ़ाने वाले तत्व को अलंकार कहते हैं। दूसरा अलं कियते अनने इति अलंकार-जो अलंकृत या विभूषित करता है उसे अलंकार कहते हैं। संस्कृत के आचार्यों की शरण लेकर रीतिकालीन आचार्य कवियों ने भी अलंकारों को कविता की जीवात्मा माना है। अलंकार हार तथा आभूषण के समान है। इस प्रकार कवयित्री ने शब्दालंकारों के अन्तर्गत अनुप्रास अलंकार, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, पुनरुक्ति प्रकाश और वीप्सा। अर्थ में उपमा, रूपक, विरोधाभास, अतिश्योक्ति, विभावना, उल्लेख आदि उदाहरण आदि अलंकारों का सार्थक व सजीव प्रयोग किया है।

अलंकार सिद्धांत के प्रवत्र्तक आचार्य भामह माने जाते हैं। उन्होंने इस चिन्तन का श्रेय स्वयं न लेकर विचारकों के एक वर्ग को दिया है जो यह मानते हैं कि अलंकृत उक्ति ही काव्योक्ति होती है। अलंकारवादी चिन्तन एक विशिष्ट सौंदर्य दृष्टि पर आधृत है। अलंकारवादियों की मान्यता है कि स्त्री का सुन्दर मुख-मण्डल भी अलंकार के अभाव में सुशोभित नहीं होता। उसमें निखार लाने के लिए अलंकरण की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार से अलंकार काव्य की शोभा बढ़ाने वाला, सज्जा या सज्जित करने वाला। इसके द्वारा अभिव्यक्ति में सरसता, भावों और भाषा में सौंदर्य का सम्पादन होता है।

"अलंकार दो प्रकार के माने जाते हैं- शब्दालंकार और अर्थालंकार। 'शब्द द्वारा सौंदर्य का उत्कर्ष करने वाले 'शब्दालंकार तथा अर्थ के उत्कर्ष द्वारा चमत्कार उत्पन्न करने वाले अर्थालंकार कहलाते हैं। इसके साथ-साथ जिन उक्तियों के सौंदर्य में शब्द और अर्थ दोनों के अलंकारों का समान योग होता है, उन्हें उभयालंकार कहा गया है।"[1]

"कविता में अलंकारों का सहज, स्वाभाविक प्रयोग होना चाहिए। अलंकारों के अनावश्यक प्रयोग से काव्य के भाव दब जाते हैं लेकिन अलंकारों का सही व उचित प्रयोग कविता के सौंदर्य में चार चाँद लगा देते हैं, इसलिए कवि को बड़ी सजगता व सचेतना से अलंकारों का प्रयोग करना चाहिए।"[2]

शब्दालंकार

काव्य में जहाँ शाब्दिक चमत्कार प्रधान रहता है वहाँ शब्दालंकार होता है-इसमें अनुप्रास, वीरसा, पुनरुक्ति प्रकाश, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति आदि अलंकार आते हैं।

अनुप्रास

स्वरों की विषमता के उपरांत भी जहाँ व्यंजनों की क्रम से आवृत्ति होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। इसके पाँच भेद-छेक, वृत्ति, श्रृति, लाट, अन्तय।

> "भैया की भाँति अपने प्यार का यदि तुम दे दो मुझे आधार
> सपने सब साकार करूँगी जीने का दे दो अधिकार।।"[3]
> "वर दे मुझे वरदायिनी हो, ब्रह्मा की शक्ति आहलादिनी हो,
> कर्म करूं कोई ऐसा जो, धर्म व मोक्षदायिनी हो।।"[4]

वीप्सा अलंकार

वीप्सा का अर्थ है-आवृत्ति। इसका संबंध भाव से रहता है। जब किसी आकस्मिक भाव को प्रकट करने के लिए एक शब्द कई बार दोहराया जाता है तब वहाँ वीप्सा अलंकार होता है-

> "घर से कदम निकलना जैसे प्राण गए शरीर से,
> बार-बार यह पीर झेलना बन जाते मासूर से।।"[5]

दूसरे शब्दों में विशिष्ट इच्छा, आदर हर्षादि भाव प्रकट करने की विशेष इच्छा से प्रयुक्त शब्दों की आवृत्ति ही वीप्सा है-

> "उदास उदास सा मन, साड़ी सूट सैंडिल और घड़ी।
> बाजार में सेल की लगी झड़ी, भारी छूट रिझाती मन।।"[6]

पुनरुक्ति प्रकाश

जब भाव को सुशोभित करने के लिए किसी एक शब्द की कई बार पुनरावृत्ति की जाती है तब वहाँ पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार होता है।

> "आस-पास के दिन कटते जब आने चिट्ठी आती है।
> काँप-काँप रह जाता है जे जब खबर बुरी कोई आती है।।"[7]
> "उदास-उदास मन, बुझी-बुझी सी आस।
> भयभीत हर पता, छिन्न-भिन्न विश्वास।।"[8]

यमक

जब एक ही छन्द में एक ही शब्द की भिन्न-भिन्न अर्थों में आवृत्ति होती है। तब वहाँ यमक अलंकार होता है-

> "सत्ताधारी रावण की कलम से आज।
> कलम हुआ, एक और न्याय यौद्धा।।"[9]

श्लेष अलंकार

छन्द में जब एक ही शब्द प्रसंग भेद में कोई अर्थों की व्यंजना करता है तब वह श्लेष अलंकार माना जाता है-

"तुम तो हुए स्वर्ग के प्रवासी तड़प रही मैं नरक की वासी।
बिना पति के दशा सती की सभी जानते भारतवासी।।"[10]

वक्रोक्ति अलंकार

वक्रोक्ति शब्द की व्युत्पत्ति वक्र-उक्ति अर्थात् वक्रतापूर्ण उक्ति के संदर्भ में हुई है। जहाँ श्रोता द्वारा वक्ता के अन्यार्थ शब्द के अन्य अर्थ की कल्पना कर लेने का वर्णन हो-

"जिन्दगी के पेड़ से, टूटा एक और दिन पत्ता-सा।
धीरे-धीरे होता निपात जीवन उदास-उदास उचटा सामना।।"[11]

अर्थालंकार

जहाँ अर्थ के माध्यम से कविता में चमत्कार उत्पन्न करने की कोशिश की जाती है वहाँ अर्थालंकार होता है।

उपमा

जब प्रत्यक्ष पृथक प्रतीत होने वाली दो वस्तुओं में समता प्रदर्शित की जाती है तब वहाँ उपमालंकार माना जाता है। उपमय, उपमान, धर्म, वाचक।

"गार्गी-मैत्रेयी सी बनूँ विदूषी कर्मवती खत्राणी सी मैं
सुभद्रा, सरोजनी बनूं कवयित्री इन्द्रा जी सी नेत्री मैं।।"[12]

रूपक अलंकार

जब उपमेय का उपमान में अभेद रूप से आरोप किया जाता है। तब वहाँ रूपक अलंकार होता है। इस अलंकार में वाचक, धर्म, उपमा के अंगों का कथन नहीं किया जाता-

"विवाह भेदी पर बैठे थे जब
परिजनों के बीच।"[13]
"जीवन-रथ के पहिये मेरे कीचड़ व दलदल में फंस गये
कोशिश कर तुरंग सब हारे अपने पराये खड़े मुँह फेरे।।"[14]

सन्देह अलंकार

जब भ्रांति से किसी वस्तु को कोई मिलती-जुलती दूसरी वस्तु समझ लिया जाए, तो वहाँ पर भ्रांतिमान अलंकार होता है-

"टूटी-फूटी हड्डी जोड़कर नया देते हो रूपाकार
धैर्यवान मुरस्कराती मूरत मानव हो या फिर अवतार।।"[15]

अतिश्योक्ति अलंकार

उक्ति से निष्पन्न, बढ़ा-चढ़ाकर। जहाँ प्रस्तुत उपमेय को छिपाकर अप्रस्तुत उपमान के साथ उसकी अभेद प्रतीति कराने का वर्णन होता है-

"माता-पिता मथुरा, काशी है, सास ससुर दोनों संन्यासी।
धन-दौलत की कमी नहीं, फिर भी छायी क्यों उदासी।।"[16]

उदाहरण अलंकार

जहाँ किसी साधारण रूप से कही हुई बात को ज्यों जैसे इत्यादि वाचक शब्दों द्वारा किसी विशेष बात से समता दिखाई दे जाती है-

"स्वाति को पुकारे चमक चाँद, को ज्यों चकोर चाहता।
बिन पानी ज्यों मीन तड़फता, तेरे दर्शन बिन जी निकलता।"[17]

निष्कर्ष रूप से कहा जाता है कि 21वीं सदी की कवयित्री डॉ. ज्ञानी देवी के काव्य सर्जना में अलंकारों से प्रत्येक कविता शोभायान दिखाई दे रही है जिस प्रकार अन्धेरी रात में चन्द्रमा का चमकता प्रकाश।

संदर्भ

1. सम्पादक डॉ. नगेन्द्र, भारतीय साहित्यकोश, पृष्ठ 59
2. डॉ. रामकुमार शर्मा, देव पदमाकर का तुलनात्मक अध्ययन, पृष्ठ 222
3. डॉ. ज्ञानी देवी, अभिमन्यु का संकल्प, पृष्ठ 16
4. काव्यांजलि, पृष्ठ 12
5. अभिमन्यु का संकल्प, पृष्ठ 31
6. काव्यांजलि, पृष्ठ 49
7. अभिमन्यु का संकल्प, पृष्ठ 38
8. काव्यांजलि, पृष्ठ 49
9. अभिमन्यु का संकल्प, पृष्ठ 91
10. वही, पृष्ठ 30
11. काव्यांजलि, पृष्ठ 49
12. अभिमन्यु का संकल्प, पृष्ठ 25
13. वही, पृष्ठ 29
14. काव्यांजलि, पृष्ठ 30
15. अभिमन्यु का संकला, पृष्ठ 106
16. काव्यांजलि, पृष्ठ 22
17. वही, पृष्ठ 42